कल्याण की राह

विभीषण-रावण संवाद

केन्द्रीय भाव

समाज की आधार इकाई व्यक्ति होता है अतः व्यक्ति के आचरण की उदात्तता ही सामाजिक परिदृश्य को कल्याणमय बनाने में समर्थ होती है। व्यक्ति के आचरण में जितनी पवित्रता आती जाएगी, समाज के कल्याण का मार्ग उतना ही प्रशस्त होता जाएगा। महाकवि तुलसीदास ने इस तथ्य को रामचरित मानस के रावण और विभीषण के संवाद में प्रकट किया है। प्रस्तुत काव्यांश इसी प्रसंग से लिया गया है। विभीषण अत्यंत विनम्रता के साथ अपने भाई रावण की गलत नीतियों का विरोध करते हैं। मुख्य रूप से वे कहते हैं कि दूसरे की पत्नी को कुदृष्टि से नहीं देखना चाहिए। राम जैसे शक्तिशाली धर्म-धुरीण अवतारी पुरुष से बैर करने में हित नहीं हैं। जिस समाज में सुमति का प्रसार होता है, उस समाज में शांति और समृद्धि निवास करती है और जिस समाज में कुबुद्धि का विस्तार होता है वह समाज विपत्तियों से ग्रस्त हो जाता है। विभीषण की ये नीतिपरक बातें रावण को समझ में नहीं आती वह क्रोधित होकर विभीषण पर अपने पाँव से आघात करता है। इसी घटना के बाद विभीषण राम से मिल जाते हैं क्योंकि उन्हें राम के चरित्र में उदात्त गुणों के दर्शन हो रहे थे और सामाजिक कल्याण के लिए राम का चरित्र प्रेरणा दायी था। इस तरह तुलसीदास लोक-कल्याण की अपनी भावना को इस काव्यांश में व्यक्त करते हैं।

विचारों का बीज लेकर संघर्षरत रहने में ही मानव का कल्याण है। कल्याण की राह की यह भावना 'गिरिजाकुमार माथुर' के गीत 'सूरज का पहिया' में है। दृढ़ निश्चय और आत्म विश्वास के द्वारा व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ता है, उसे अनीति के आगे नहीं झुकना चाहिए। इसी विश्वास में उसका भविष्य उज्जवल है, इसलिए 'विश्वास का सोनचक्र' नहीं रुकना चाहिए।

सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसासन॥
जो कृपाल पूँछिहु मोहि बाता । मति अनुरूप कहउँ हित ताता ॥
जौ आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई॥

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजह भजहिं जेहि संत॥

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला॥
ब्रह्मा अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी॥
जन रंजन भंजन खल ब्राता बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता॥
ताहि बयरू तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा॥
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रय ताप नसावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥

बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोसलाधीस ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात॥

माल्यवन्त अति सचिव सयाना। तासु बचन सुनि अति सुख माना॥
तात अनुज तव नीति बिभूषन। सो उर धरहु जो कहत बिभीषन॥
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ। दुरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी॥
सुमुति कुमति सबके उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं।
जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ।।
तब उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता॥
कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥

दोहा : तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार ॥

सूरज का पहिया

कवि परिचय :

गिरिजा कुमार माथुर

गिरिजा कुमार माथुर का जन्म सन् 1919 में गुना (मध्यप्रदेश) में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उत्तरप्रदेश के झाँसी नगर में हुई। उन्होंने विक्टोरिया कॉलेज ग्वालियर से बी.एससी. और लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा समाप्त करके उन्होंने आकाशवाणी में कार्य प्रारंभ किया, बाद में दूरदर्शन से सेवानिवृत्त हुए। इनकी मृत्यु सन् 1994 ई. में हुई।

गिरिजाकुमार माथुर की प्रमुख रचनाएँ हैं : नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, भीतरी नदी की यात्रा, जो बँध नहीं सका, जनम कैद (नाटक), नई कविता सीमा और संभावनाएँ (आलोचना)।

गिरिजा कुमार माथुर के गीत छायावादी प्रभाव लिए हुए हैं। इसमें आनन्द, रोमांस और संताप की तरल अनुभूति के साथ-साथ लय भी मिलती है। उनके शब्द चयन में तुक-तान और अनुतान की काव्यात्मक झलक ध्वनित होती है। उनकी रचनाओं में मालवा की समृद्ध प्रकृति का विलक्षण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, जिसका अनुभव-आनंद उन्होंने बचपन से ही लिया है। वस्तुतः वे मांसल रोमांस के कवि हैं। वे वाचिक कविता-पाठ परंपरा के अधिक निकट प्रतीत होते हैं। उनकी कविताओं में आंचलिक शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। आधुनिक कवियों में इनका प्रमुख स्थान है।

मन के विश्वास का यह सोनचक्र रुके नहीं
जीवन की पियरी केसर कभी चुके नहीं

उम्र रहे झलमल
ज्यों सूरज की तश्तरी
डंठल पर विगत के
उगे भविष्य संदली
आँखों में धूप लाल
छाप उन ओठों की
जिसके तन रोओं में
चंदरिमा की कली

छाँह में बरौनियों के चाँद कभी थके नहीं
जीवन की पियरी केसर कभी चुके नहीं

मन में विश्वास
भूमि में ज्यों अंगार रहे
आरई नज़रों में
ज्यों अलोप प्यार रहे
पानी में धरा गंध
रुख में बयार रहे
इस विचार-बीज की
फसल बार-बार रहे

मन में संघर्ष फाँस गड़कर भी दुखे नहीं
जीवन की पियरी केसर कभी चुके नहीं

आगम के पंथ मिलें
रंगोली रंग भरे
तिए-सी मंजिल पर
जन भविष्य-दीप पर
धूरी साँझ घिरे
उम्र महागीत बने
सदियों में गूँज भरे

पाँव में अनीति के मनुष्य कभी झुके नहीं
जीवन की पियरी केसर कभी चुके नहीं

अभ्यास

बोध प्रश्न-

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(1) कवि 'मन' में किस बात के लिए इंगित करते हैं ?

(2) कवि किस चक्र को नहीं रुकने देने की बात करता है ?

(3) तुलसीदास एवं गिरिजाकुमार माथुर की दो अन्य कविताओं के नाम लिखिए।

(4) 'तात राम नर नहीं भूपाला' कथन किसने किससे कहा?

(5) माल्यवंत कौन था ?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न-

(1) विभीषण रावण से बार-बार क्या विनती करता है ?

(2) ''सीता देहु राम कहुँ अहित न होय तुम्हार'' से क्या आशय है ?

(3) ''पाँव में अनीति के मनुष्य कभी झुके नहीं'' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(1) विभीषण के समझाने पर रावण ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की ?

(2) 'सूरज का पहिया' से कवि का क्या आशय है ?

(3) 'विभीषण रावण संवाद' एवं 'सूरज का पहिया' कविताएँ कल्याण की राह बताती हैं। स्पष्ट कीजिए।

(4) 'सूरज की तश्तरी' से कवि का क्या आशय है?

काव्य सौन्दर्य-

- संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(1) सचिव, बैद गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होई बेगही नास।

(2) मन के विश्वास का यह सोनचक्र रुके नहीं।
जीवन की पियरी केसर कभी चुके नहीं।

(3) काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहिं भजहु भजहिं जेहि संत।

(4) 'तुलसीदास' एवं 'गिरिजाकुमार माथुर' की काव्य कला की विशेषताएँ लिखिए।

योग्यता विस्तार-

(1) 'कल्याण की राह' दिखाने वाली अन्य दो कविताएँ खोज कर लिखिए।

(2) तुलसीदास के काव्य ग्रंथों की सूची बनाइए।

(3) प्रयोगवाद के कवियों की रचनाएँ ढूँढ़ कर लिखिए।

शब्दार्थ -

अनीति - नीति रहित, फाँस - एक प्रकार का काँटा, रंगोली - अल्पना, बयार - हवा, चक्र - पहिया